International Research Journal of Human Resource and Social Sciences

ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)

Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018

Website- www.aarf.asia, **Email** :editoraarf@gmail.com

fnudj dk ;qx cks/k

Mk. हिमांशु प्रियदर्शी

एस0आर0के0जे0 हाई स्कूल कुशहर

सारांश

ओज, पौरुष और क्रांति के सर्वमान्य कवि दिनकर के काव्य में युग–pruk dk Loj ie[krk l iLQfVr gvk gA fnudj ¼dchj vkj fujkyk dh Hkkfr½ Økfrdkjh dfo gA उनका काव्य अपने युग का यथार्थ बोध तो कराता ही है, साथ ही उन्हें युग–द्रष्टा होने dk Hkh Hkku djkrk gA bl dkj.k bUg ;x xk;d Hkh dgk x;k gA bld fy, mud 'जनतंत्र का जन्म' कविता का उदाहरण द्रष्टव्य है– ''दो राह समय के रथ का घर्घर नाद lqk@flgklu [kkyh djk fd turk vkrh gA^^

fnudj dk vkfoHkko ml dky e gvk tc lkfgR; e ^oknk^ dk ikjHk gk pdk Fkk और छायावाद अपने चरमोत्कर्ष पर था। साथ ही खडो बोली के प्रणेताओं और राष्ट्रीयता प्रधान स्वच्छंदतावादी काव्यधारा का युग था। अतः दिनकर छायावादोत्तर युग के राष्ट्रीय lkLdfrd dk0; /kkjk d dfo gA fnudj dh lkfgR; d {k= e vorfjr gku d le; को रेखांकित करते हुए देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' ने लिखा है–^^fnudj th u ftl le; fgUnh काव्य जगत को अपने शंख–निर्घोष से निनादित किया था, उस समय 'छायावाद' के रूप में प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की बृहद् चतुष्टयी की समवेत काव्य–साधना का बोलबाला था। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त का dk0;konu पूर्व– पीठिका के तौर पर संदर्भित किया जाने लगा था। उधर राष्ट्रीयता प्रधान

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

स्वच्छंदतावादी कावयधारा के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी और सोहनलाल द्विवेदी भी ख्याति के उच्चतर सोपानों को सुशाfHkr dj jg FkA ,lh xgekxxgeh d nkM e viuh ,d vyx igpku cuku d लिए जो संघर्ष कवि दिनकर ने किया उसकी गाथा भी, कम संर्घषपूर्ण नहीं है।''[1]

Hkfedk

vkt vkj Økfr d vxnr dfo fnudj dk ;x pruk dk0; ;x pruk l liDr g A fnudj vrhr dh èofu l oreku dk tkxr dju oky ;x pkj.k dfo g A fnudj का अविर्भाव उस समय होता है जब देश आजादी के लिए छटपटा रहा था, बेचैन था । bl dkj.k mud dk0; e Økfrdkjh Loj LQfVr gvk A fnudj dk dk0; ldYi] संघर्ष, आस्था और जिजीविषा का काव्य है । इनकी कविता राष्ट्र को जाग्रत करने वाली, le; lnHkk l lokn dju okyh dfork g A

हिन्दी साहित्य के इतिहास में राष्ट्रकवि होने का गौरव अभी तक दो ही कवि को मिला है– पहला मैथिलीशरण गुप्त और दूसरा रामधारी सिंह 'दिनकर'। जहाँ गाँधी जी ने xlrth dk ;g mikf/k दी जिसे पूरे देश ने स्वीकार की और वही दिनकर जी को यह उपाधि हिन्दी समाज (जगत) ने ही दिया जिसे पूरे राष्ट्र ने सहर्ष स्वीकार किया। इसके पीछे दिनकर का राष्ट्रवादी स्वर ही प्रमुख था। ऐसा लगता है कि दिनकर ने अपना चिंतन राष्ट्र और राष्ट्रीयता को ही समर्पित किया था। इस राष्ट्र–चिंतन की झलक केवल उनकी कविताओं में ही नहीं, बल्कि उनके निबंधों में भी मिलती है। इसका सशक्त उदाहरण mudk fuc/k &lxg ^lLdfr d pkj v/;k;^ gA

तथ्य विश्लेषण

दिनकर का प्रारंभिक जीवन आभावों एवं संघर्षो में बीता। उनकी कविता में उनके thवनानुभव का असर स्पष्ट दिखाई देता है । दिनकर की कविता उनके जीवनानुभव से liDr g A fnudj Nk= thou l gh dfork fy[kuk ijHk dj fn;k Fkk A budh प्रारंभिक कविता 'छात्र सहोदर' पत्रिका में 1925 में छपी। तत्पश्चात 1928 में इनका पहला

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

कविता संग्रह ‘विजय संदेश’ शीषक नाम से प्रकाशित हुआ । 1930 में पहला काव्य संग्रह ‘प्रणभंग’ खण्ड काव्य प्रकाशित होती है । इसमें दिनकर महाभारत की छोटी सी घटना की काव्यमय अभिव्यक्ति के माध्यम से देश की सुप्त जनता को जाग्रत करने की कोशिश करते हैं । रेणुका 1935ई0 के प्रकाशित होने के ckn fgUnh txr e ifl) dfo d :lk e प्रतिष्ठित हो जाते हैं । इस काव्य–ग्रंथ में कवि के मानवतावादी प्रवृति के दर्शन होते हैं ।

सन् 1939 ई0 में ‘हुँकार’ काव्य के प्रकाशन के बाद दिनकर एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में, जागरण कवि के रूप में पूरे देश में प्रसिद्ध हो जाते हैं । देश जब–जब भी बाहरी एवं भीतरी संकटों से घिरा। उन्होंने अपनी हुँकार से देश की जनता को सचेत एवं जागृत fd;kA lाथ ही हुंकार के साथ अपने उदय का उदघोष भी –

^^lfyy d.k g fd ijkokj g e ?
Lo; Nk;k] Lo; vkHkkj g eA

c/kk g Lolu g] y?kor e g]
ugh rk O;ke dk foLrkj g eA

lu D;k fl/k! e xtu rEgkjk ?
Lo; ;x /ke dh gdkj g eA** [2]

fnudj oLrr% fdlh ^okn^ d i{k/kj ugh gA fnudj oknk dk vfrØe.k dju oky dfo g vkj fopkj/kkjkvk dh v/kh ifrc)rk e mudk Hkjkl k dHkh ugh jgkA mud dk0; e fonkg vkj Økfr dh Hkkouk, n[kdj mUg ixfroknh le>k tkrk FkkA blds ,d उदाहरण द्रष्टव्य है–

^^gVk O;ke d e/k] iFk l] Lox yVu ge vkr g]
^^n/k &n/k vk oRl! rEgkj] n/k [kktu ge tkr gA^^[3]

उन्होंने शोषित, दमित, दलित और उपेक्षित जनता की पीड़ा को वाणी दी और उसे न्याय दिलाने के लिए सदा सचेष्ट रहे। किसानों और मजदूरों के प्रति उनके मन में गहरी सहानुभूति थी। उनके दीन –हीन दशा के प्रति कवि के मन में असीम पीड़ा है, दर्द है, cpuh gA mud nn dk ok.kh nr g, fy[kk&

" जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,

NV cy d lx dHkh thou e] ,lk ;ke ugh gA^^[4]

दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरूकता । कवि अपने देश और काल के सत्य को अनुभूति vkj fpru nkuk gh Lrj ij xg.k dju e leFk gvk g A

dfo u viu le; dh dV vkj dfVy lpkb l dgh Hkh vk[k ugh pjkb A उसका कर्त्तव्य बोध उसे सर्वत्र प्रेरित करता है। वे कहते हैं–

"श्वानों को मिलते दूध–वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,

ek dh gMMh l fpid fBBj tkMk dh jkr fcrkr g

;orh d yTtk&olu cp tc 0;kt pdk, tkr g]

ekfyd tc ry &Qyyk ij ikuh &lk n0; cgkr gA**[5]

स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्षों बाद भी देश की हालत में कोई विशेष बदलाव नहीं vk;k FkkA mUgku Hk[k] cjkजगारी, बेगार, अत्याचार और शोषण से पीड़ित कोटि–कोटि जनता को कराहते देखा । जब वे देश की राजधानी दिल्ली गए तो वहाँ की (शहंशाही) राजशाही ठाट–बाट और वैभव को देखकर उनकी आत्मा कराह उठी। 'दिल्ली' शीर्षक कविता में उन्होंने अपने आक्रोश और मनोHkko dk 0;Dr fd;k g&

^^ r u ,B enekrh fnYyh!

Ekr fQj ;k brjkrh fnYyh!

oHko dh nhokuh fnYyh!

कृषक–मेघ की रानी दिल्ली!

vukpkj] vieku] O;X; dh

pHkrh gb dgkuh fnYyhA^^[6]

दिनकर द्वंद्व के कवि हैं । द्वंद्व मनुष्य की वृत्ति है । द्वंद्व जब oxorh gkrh g तो संकल्प और गहरा हो जाता है । यह द्वंद्व कवि के शब्दशः ‘द्वंद्व– गीत’ uked dkO; lxg e e[kj gvk A ^}}&xhr* dkO; lxg e Lolu vkj ;FkkFk dk }} g] ftl fnudj xhr dk :Ik nr g A

^lke/kuh^ dkO;&संग्रह के माध्यम से दिनकर अन्तर्राष्ट्रीय चेतना से सम्पन्न कवि के रूप में प्रकट होते हैं, किन्तु राष्ट्रीय चेतना के प्रति वे अधिक सजग दिखते है । दिनकर के इस काव्य संग्रह में उनका युग द्रष्टा रूप उभरा है ।

दिनकर का कुरूक्षेत्र विचार प्रेरक काव्य है । यह विश्व, जगत को संदेश देu okyk काव्य है । जहाँ समता हो, समरसता हो वहाँ मनुष्यता महिमा मंडित हो सके । आधुनिक युग की सर्वाधिक समस्या है युद्ध और शांति की । यही समस्या कुरूक्षेत्र की मूल समस्या है और इस समस्या का विश्लेषण और समाधान कवि ने भारतीय दृष्टिकोण से किया है । ;) dkb ugh pkgrk yfdu tc ;) d flok vkj dkb pkjk ugh gk rk yMuk gh vkf[kjh fodYi g A vU;k; vkj ;kruk d fo:) foxy Qdr g, o fy[kr g&

^^lej fu| g /kejkt ij]

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

कहो शांति वह क्या है\

tk vuhfr ij fLFkj gkdj Hkh

cuh gb lnyk gA^^[7]

fdlh Hkh jाष्ट्र के लिए युद्ध को विकास अथवा विस्तार के साधन के रूप में नहीं स्वीकारा जा सकता परन्तु देश की आत्मरक्षा के लिए सैन्य–शक्ति का सन्तुलन और उसके प्रयोग की सामर्थ्य को दिनकर ने राष्ट्र का आवश्यक अंग माना है। स्वत्व, धर्म और lEeku dh j{kk d fy, tk ;) fd;k tkrk g og iki ugh gkrkA o fy[kr g&

^^Nhurk gk LoRo dkb] vkj r

R;kx&ri l dke y ;g iki gA

i.; g fofPNUu dj nuk ml

mB jgk rjh rjQ tk gkFk gkA**[8]

दिनकर जी युद्ध–कालीन कर्तव्य–कर्मों तथा युद्ध के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण ^d#{k=^ e iLrr fd;k g] fdUr ;) dk thou ;k lekt d lk/; :i e mUgku dHkh Lohdkj ugh fd;k A mudh dkeuk ;gh jgh&

^^/ke dk nhid] n;k dk nhi]

कब जलेगा, कब जलेगा, विश्व में भगवान\

dc ldkey T;kfr l vfHkflDr

gk] ljl gkx tyh&l[kh jlk d ik.k**[9]

;) pkg जिस कारण से होते रहे हों, युद्ध के लिए कोई एक व्यक्ति उत्तरदायी न होकर सारा समाज होता है। इसलिए युद्ध के कारणों पर समष्टिगत रूप में विचार करना gkxk] O;fDrxr :i e ugh A

रश्मिरथी (1952 ई0) महाभारत के विशिष्ट पात्र कर्ण के चरित्र पर आधारित एक ic/k dkO; g A ^रश्मिरथी' आधुनिक युग–चेतना का वाहक काव्य है। दिनकरजी ने इसकी भूमिका में स्पष्ट कर दिया है कि यह युग दलितों और उपेक्षितों के उद्धार का युग है, ekuoh; x.kk dh igpku dk ;x g] futh x.kk l vftr in iklr dju dk ;x gA bl d ekè;e l dfo lekt e O;klr iftoknh] tkfroknh O;oLFkk ij djkjk igkj करता हैं । यह मनुष्य की शक्ति और विजय यात्रा का काव्य है । वे लिखते हैं–

^^[ke Bkd Byrk g tc uj] ior d tkr iko m[kM A

ekuo tc tkj yxkrk g]iRFkj ikuh cu tkrk g A**[10]

उर्वशी (1961ई-) के प्रकाशन के बाद वे संवेदनशील और क्रांतिकारी कवि के साथ दार्शनिक और प्रेम के कवि के रूप में सामने आते हैं । उर्वशी कामाध्यात्म का काव्य है । हमारे ऋषि मनिषियों ने माना है कि काम ही जब साधना से दिप्त हो जाता है, तब मनुष्य dh d.Myuh m)xkeh gkrh g A rk ogh dke vè;kRe e ifj.kr gk tkrh g A

'उर्वशी' में व्यक्त–प्रेमदर्शन को 'वासना' से 'दर्शन' तक पहुँचाया गया है –

''पहले प्रेम स्पर्श होता है

rnuUrj fpUru HkhA

i.k; iFke feÍh dBkj g

rc ok;O; xxu HkhA** [11]

‘उर्वशी’ नाट्य काव्य है, ‘उर्वशी’ प्रबंध–काव्य भी है । ‘उर्वशी’ की भाषा नयी भाषा है। दिनकर की प्रेम दृष्टि ‘उर्वशी’ में पूर्णतः फलित हुई है । दिनकर का पुरूषार्थ बोल mBrk g &

^^eR; ekuo dh fot; dk r; g e]

उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं ।’’[12]

निष्कर्ष &

fnudj d dk0; dk ey Loj foLQkV vkj fonkg g A j.kdk] gdkj] d:{k= और उर्वशी इस विस्फोट के विभिन्न क्षेत्र है । दिनकर अपने युग का चारण कवि हैं । lPpkb ;g g fd o lekftd pruk d pkj.k dfo g A o viuh dfork l lekt e ifjoru ykuk pkgr g । दिनकर की काव्य बोध अभाव से भाव निषेध से स्वीकृति, fuofÙk l iofÙk] fnokLoiuk l fpru] vkj dYiuk l de dh vkj vxlj gb g A fnudj dk lkfgR; lLdfr&fpru fgUnh lkfgR; dh eY;oku miyfC/k g A fnudj dk dk0;&lxg ;kou d m|ke ox dh ok.kh gh ugh ;x dh ok.kh Hkh gA fnudj dh इन रचनाओं में इस प्रकार युगद्रष्टा के साथ–साथ उनका युग– स्रष्टा का रूप भी दर्शित gkrk gA

lanHk& lwph

1- देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र' आजकल अक्टूबर 2008 पृ0 8–9
2- jke/kkjh flag fnudj] gdkj] mn;kpy] iVuk] i0 102&103
3- ogh] i0 36
4- ogh] i0 34
5- ogh] i0 84
6- ogh] i0 63&64
7- jke/kkjh flag fnudj] d#{k=] rrh; lx] jktiky ,.M lUl] fnYyh] i0 & 20
8- ogh] f}rh; lx] i0 16
9- रामधारी सिंह दिनकर, कुरुक्षेत्र षष्ट सर्ग, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली पृ0 – 66
10- रामधारी सिंह दिनकर, रश्मिरथी, उदयkpy] iVuk] i0 &27
11- रामधारी सिंह दिनकर, उर्वशी, तृतीय अंक, उदयाचल पटना, पृ0– 48
12- ogh] i0 53